सनन्ध–इमाम के प्रताप की

प्रताप इमाम कहा कहूं, इन जुबां कह्यो न जाए।
तो भी नेक रोसन करूं, तुम लीजो चित ल्याए।। १ ।।

हे मोमिनो! इमाम साहब (श्री प्राणनाथजी) जी की महिमा का कहां तक वर्णन करूं? यह इस जबान से कहने में नहीं आती, तो भी थोड़ा सा जाहिर करती हूं। तुम इसे चित्त में रख लेना।

ए नेक करूं इसारत, तुम सुनियो आखिर दिन।
पेहेले मिलसी रूह मोमिन, पीछे तो सब जन।। २ ।।

मैं आखिरत के दिन की थोड़ी-सी हकीकत कहती हूं। सबसे पहले मोमिनों को उनका सुख मिलेगा। पीछे सारे संसार को सुख मिलेगा।

ए सरत सोई जो आगे करी, हक इलम होसी जाहेर।
लिख्या है कुरान में, आया सो आखिर।। ३ ।।

मुहम्मद साहब ने पहले से ही वायदा किया था कि आखिरत में हक का इल्म जाहिर होगा। उसी के अनुसार जो कुरान में लिखा है, वह आखिरत का समय आ गया है।

सब्द गुझ पुकारहीं, सब में सचराचर।
सो सारे कदमों तले, जब आए इमाम आखिर।। ४ ।।

अब इमाम साहब के आने पर कुरान के सब भेद खुल गए और सबने जान लिया। पहचान कर सब इमाम मेंहदी के चरणों में आ गए।

खेल पाया इसदाए से, आप असल बका घर।
सब सुध हुई प्रताप तें, जब आए इमाम आखिर।। ५ ।।

खेल का कारण जिससे संसार बना और इश्क रब्द जो परमधाम में हुआ, उन सबकी खबर इमाम मेंहदी के आने पर मिल गई।

ए जो खेल था कुदरती, काहूं खोल न देखी नजर।
सो उड़ाए दई पेड़ जुलमत, जब आए इमाम आखिर।। ६ ।।

यह झूठा खेल माया का था। इसे किसी ने आंख खोलकर पहचाना नहीं था। उसे जड़ (मूल) से उखाड़कर इमाम मेंहदी ने नष्ट कर दिया।

त्रिगुन त्रैलोकी मोह की, कहां तें हुई किन पर।
सो संसे न रह्या किन का, जब आए इमाम आखिर।। ७ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड और मोह तत्व की उत्पत्ति कहां से हुई और किसके लिए हुई, इमाम मेंहदी के आने से सबके संशय मिट गए।

निरंजन निराकार तें, खेल रच्यो नारी नर।
ए सुध हुई सबन को, जब आए इमाम आखिर।। ८ ।।

निराकार और निरंजन से प्रकृति पुरुष ने खेल बनाया। उसकी खबर इमाम साहब के आने से सबको मिल गई।

Nijanand App

ए जो फरिस्ते नूर से, खेल तिने किया पसर।
ए गुझ सारों ने पाइया, जब आए इमाम आखिर।। ९ ।।

अक्षर के तीनों नूरी फरिश्तों (मैकाईल, अजाजील और अजराईल अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शंकर) ने ही इस खेल को बनाया है। इस गुझ रहस्य का भी पता इमाम मेंहदी के आने से सबको लग गया।

काल सुन्य जड़ चेतन, ए सब हुए जाहेर।
ए धोखा किन का न रह्या, जब आए इमाम आखिर।। १० ।।

काल, निरंजन शक्ति, निराकार, शून्य, जड़ और चेतन सबकी पहचान जाहिर हो गई। इमाम मेंहदी के आने से सबके धोखे मिट गए।

वेद कतेब के माएने, सब दृढ़ हुए दिल धर।
किए मगज माएने जाहेर, जब आए इमाम आखिर।। ११ ।।

वेद, कतेब के अर्थ जो दुनियां नहीं जानती थी उन सबका पता चल गया। इमाम साहब ने आकर इनके छिपे रहस्यों को जाहिर कर दिया।

इलम ले ले अपना, सब जुदे हुए झगर।
सो सारे एक दीन हुए, जब आए इमाम आखिर।। १२ ।।

सब लोग अपने-अपने ज्ञान से आपस में झगड़ रहे थे। अब वह इमाम साहब के आने से एक दीन (धर्म) में आ गए।

गैबी मार दज्जाल का, सब में गया पसर।
सो साफ हुई सब दुनियां, जब आए इमाम आखिर।। १३ ।।

दज्जाल जो सबके अन्दर बैठकर गुप्त मार मार रहा था, इमाम साहब के आने से दुनियां को उससे मुक्ति मिली।

आग बिना सब दुनियां, अगिन हुई जर बर।
सो सारे ठंढ़े किए, जब आए इमाम आखिर।। १४ ।।

बिना आग के दुनियां जलकर राख (बेइमान) हो चुकी थी। इमाम साहब के आने से ठण्डक मिली, अर्थात् सबको ईमान देकर सुख दिया।

दुनियां गोते खावहीं, बिन जल भवसागर।
सो सारे ही थिर किए, जब आए इमाम आखिर।। १५ ।।

भवसागर में बिना पानी के दुनियां डूब रही थी। उसको इमाम साहब ने आकर ज्ञान दे दिया, अर्थात् उसके संकल्प, विकल्प मिट गए।

क्यों पैदा क्यों होसी फना, ए ना काहू को खबर।
सो सारों को सुध हुई, जब आए इमाम आखिर।। १६ ।।

यह संसार कैसे पैदा हुआ और कैसे मिटेगा, यह खबर किसी को नहीं थी। इमाम साहब के आने से यह खबर सबको मिल गई।

Nijanand App

छिपिया सांच सबन से, झूठ गया पसर।
सो सारे सत ले खड़े, जब आए इमाम आखिर।। १७ ।।

सत जो पारब्रह्म है, उसकी पहचान किसी को नहीं थी। सारे संसार में झूठ ही फैला था, अर्थात् लोग निराकार के पूजक थे। अब इमाम साहब के आने से सब सत पारब्रह्म को जान गए और उसी रास्ते पर चलने लगे।

काम क्रोध दिमाग में, सब धखे निस वासर।
सो सारे ठंढ़े हुए, जब आए इमाम आखिर।। १८ ।।

दुनियां काम, क्रोध, अहंकार की अग्नि में रात-दिन जलती थी। इमाम साहब ने आकर सबको शान्त कर दिया।

सब्द न लगे काहू को, ऐसे हिरदे भए बजर।
सो गलित गात हुए निरमल, जब आए इमाम आखिर।। १९ ।।

दुनियां के दिल इतने कठोर हो गए थे कि किसी को शब्दों की चोट नहीं लगती थी। अब इमाम साहब के आने से सब नर्म और निर्मल हो गए।

मुस्लिम को मुस्लिम की, हिंदुओं हिंदुओं की तर।
ए समझे सब अपनी मिने, जब आए इमाम आखिर।। २० ।।

मुसलमानों को मुसलमानों के ग्रन्थों से और हिन्दुओं को हिन्दुओं के ग्रन्थों से, इमाम साहब ने हर एक को उनके ही ग्रन्थों से समझाया।

मने फिराई दुनियां, रेहे ना सक्या कोई थिर।
सो मन सारे थिर किए, जब आए इमाम आखिर।। २१ ।।

मन ने सारी दुनियां को वश में करके माया के चक्कर में डाल रखा था। इमाम साहब ने आकर सबके मनों के संशय मिटाकर पारब्रह्म के रास्ते में लगाकर स्थिर कर दिया।

अलख जो अगम कहावहीं, ताकी कर कर थके फिकर।
सो सक सुभे सब उड़ गई,, जब आए इमाम आखिर।। २२ ।।

पारब्रह्म जिसको किसी ने देखा नहीं, जहां कोई पहुंचा नहीं तथा जिसे सब खोज-खोजकर थक गए, इमाम साहब ने आकर सबके संशय मिटा दिए।

सुध आतम परआतमा, सक्या ना कोई कर।
सो सारे धोखे मिटे, जब आए इमाम आखिर।। २३ ।।

संसार में आत्मा और परआतम की पहचान कोई नहीं करा सका था। आखिरी इमाम साहब के आने से सबके धोखे मिट गए और पहचान हो गई।

हद बेहद के पार की, सब देख थके फेर फेर।
सो सारों ने देखिया, जब आए इमाम आखिर।। २४ ।।

हद और बेहद के पार परमधाम की खोज करके सब थक गए थे। आखिरी इमाम साहब ने वह सब जाहेर करके बता दिया।

Nijanand App

पार सुध किन ना हती, बाहेर अंदर अंतर।
सो सारे संसे गए, जब आए इमाम आखिर।। २५ ।।

पारब्रह्म पिण्ड में है या ब्रह्माण्ड में है या इससे भी परे बेहद में है, इसकी खबर किसी को नहीं थी। इमाम साहब ने आकर सबके संशय मिटा दिए।

ढूंढ़ ढूंढ़ के सब थके, ए जो लैलत कदर।
ए दरवाजा खोलिया, जब आए इमाम आखिर।। २६ ।।

सभी मुसलमान लैल-तुल-कद्र की रात को ढूंढ़-ढूंढ़कर थक गए, पर यह किसी को मिली नहीं। अब इमाम साहब ने आकर इसके भेद बता दिए।

नोट : यह रात्रि हजार महीने से बेहतर सम्वत् १६३८ से १७३५ तक की है।

कहांतें नूर-तजल्ला की, जो नूर की भी नहीं खबर।
सो परदे उड़े सबन के, जब आए इमाम आखिर।। २७ ।।

संसार को अक्षर ब्रह्म की ही खबर नहीं थी तो अक्षरातीत की पहचान कैसे होती? अब इमाम साहब ने आकर क्षर, अक्षर और अक्षरातीत सभी के भेद खोल दिए।

कहांतें अछरातीत की, जो सुध न अछर छर।
सो सारे जाहेर हुए, जब आए इमाम आखिर।। २८ ।।

जिनको क्षर और अक्षर की सुध नहीं थी, उनको अक्षरातीत की सुध कहां से होती? अब इमाम साहब आ गए हैं और उन्होंने इन सबकी पहचान करा दी।

इस्क खसम बतावहीं, उड़ाए दिया सब डर।
कायम सुख सब लेवहीं, जब आए इमाम आखिर।। २९ ।।

पारब्रह्म से तथा जन्म-मरण के चक्कर से डरने वाले लोगों को अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति का रास्ता बताकर सबका डर दूर किया। अब इमाम साहब के आने से सब अखण्ड सुख लेंगे।

मोमिन पीछे न रहें, ताए सके न कोई पकर।
उमेदां पूरी सबन की, जब आए इमाम आखिर।। ३० ।।

इस अखण्ड सुख के लेने के लिए मोमिन कभी पीछे नहीं रहेंगे। उन्हें कोई पकड़ नहीं सकेगा। इमाम साहब ने आकर सबकी मुराद पूरी की।

बड़े सुख मोमिन लेवहीं, रस इस्क पिएं भर भर।
औरों को भी पिलावहीं, जब आए इमाम आखिर।। ३१ ।।

मोमिन पारब्रह्म के इश्क के रस को जी भर के पीते हैं और बड़ा सुख अनुभव करते हैं। अब इमाम मेंहदी के आने से यह सुख मोमिनों ने औरों को भी देना शुरू कर दिया।

ए सुख कह्यो न जावहीं, रह्यो न कछू अंतर।
मोमिन रूहें जाहेर हुए, जब आए इमाम आखिर।। ३२ ।।

मोमिनों के इश्क के सुख की बात कही नहीं जाती। अब मोमिनों और पारब्रह्म के बीच कोई अन्तर नहीं रह गया। इमाम मेंहदी के आने से इन मोमिनों की पहचान सारे जगत को हुई।

Nijanand App

सुख आसिकों क्यों कहूं, जो लेवें मासूक अंदर।
सुन मोमिन टूक होवहीं, जब आए इमाम आखिर।। ३३ ।।

ऐसे मोमिन जो पारब्रह्म के आशिक हैं तथा जिन्होंने पारब्रह्म को अपने अन्दर बिठा रखा है, उनके सुख का वर्णन कैसे करूं? जब इमाम साहब आए तो मोमिनों ने अपने आपको उन पर समर्पित कर दिया।

पीछे जहान इन दुनी की, दौड़ी आवे एक दर।
तब तो सुख सागर हुआ, जब आए इमाम आखिर।। ३४ ।।

मोमिनों के सुख को देखकर यह सारी दुनियां मोमिनों के पीछे ही रास्ते पर दौड़ी आ रही है। जब इमाम साहब आए तो सुख सागर की तरह लहरें लेने लगे।

चौदे तबक हुई कजा, एक जरा न रह्यो कुफर।
सो साफ किए सबन को, जब आए इमाम आखिर।। ३५ ।।

चौहद तबकों के जीवों का न्याय हो गया। जरा भी झूठ नहीं रहा। इमाम साहब ने आकर सबको पाक साफ कर दिया।

ए जो काजी कजा करी, सो भी मोमिनों की खातिर।
औरों पाया मोमिन बरकतें, जब आए इमाम आखिर।। ३६ ।।

पारब्रह्म ने मोमिनों के लिए आकर कजा की है (न्याय किया है), जब इमाम साहब आए तो मोमिनों की कृपा से सबको अखण्ड बहिश्त मिली।

बेचून बेचगून बेसबी, है बेनिमून क्यों कर।
सो जाहेर हुआ सबन को, जब आए इमाम आखिर।। ३७ ।।

पारब्रह्म को किसी ने बनाया नहीं। उसके अन्दर कोई गुण नहीं। उसके जैसा कोई रूप नहीं। उस जैसा कोई नमूना नहीं। इस रहस्य को भी इमाम साहब ने आकर जाहिर किया।

सेहेरग से हक नजीक, ए खोली न किन नजर।
सो पट उड़ाए जाहेर किए, जब आए इमाम आखिर।। ३८ ।।

पारब्रह्म शहेरग से नजदीक किस तरह से हैं, यह कोई नहीं जान सका था। आखिरी इमाम ने आकर इस भेद को खोल दिया (अर्थात् यह बताया कि वह मोमिनों के दिल में ही बैठे हैं)।

कई आलम पल में पैदा फना, करें हक कादर।
सो देखाए दुनी कायम करी, जब आए इमाम आखिर।। ३९ ।।

अक्षर ब्रह्म के हुकम से एक पल में कई ब्रह्माण्ड पैदा और फना होते हैं। आखिरी इमाम साहब ने आकर अक्षर की पहचान कराई और दुनियां को अखण्ड कर दिया।

थी उरझन चौदे तबक में, सब जाते थे मर मर।
दई हैयाती सबन को, जब आए इमाम आखिर।। ४० ।।

चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड में बड़ी उलझनें थीं कि सब बार-बार जन्मते और मरते थे। आखिरी इमाम साहब ने आकर सबको अखण्ड कर दिया और जन्म-मरण की उलझन मिटा दी।

किन पाया न मगज मुसाफ का, जो ल्याया आखिरी पैगंमर।
किया जाहेर यासों हक बका, जब आए इमाम आखिर।। ४१ ।।

कुरान, जिसे मुहम्मद साहब लाए थे, के छिपे भेदों को कोई नहीं जान पाया था। जब आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी आए तो उन्होंने पारब्रह्म और अखण्ड घर के सारे भेद खोल दिए।

Nijanand App

लेवे खिताब इमाम का, बातून खुले न इन बिगर।
सो खोल के भिस्त दई सबों, जब आए इमाम आखिर।।४२ ।।

कइयों ने यहां इमाम होने का दावा किया, परन्तु कुरान के बातूनी अर्थ आखिरी इमाम श्री प्राणनाथ जी के बिना कोई खोल नहीं सका और न कोई दुनियां को अखण्ड बहिश्तों में कायम कर सका।

थी रात अंधेरी सबन में, बका दिन देखाए करी फजर।
मकसूद किया सबन का, जब आए इमाम आखिर।।४३ ।।

सबके अन्दर (मन में) अज्ञानता का अन्धकार भरा हुआ था। आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी ने अखण्ड ज्ञान जाहिर कर उजाला कर दिया। इससे सबको परमधाम की पहचान कराकर सबकी मनोकामना पूरी की।

इलम लदुन्नी काहूं न हुता, कर जाहेर मिटावे कुफर।
दिया सुख कायम सब को, जब आए इमाम आखिर।।४४ ।।

किसी के पास जागृत बुद्धि का ज्ञान (तारतम वाणी) नहीं था, जिससे सारे संसार के संशय मिटते। जब आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी आए तो सबको अखण्ड सुख प्राप्त हुआ।

कोई बेसक दुनी में न हता, गई दुनियां एती उमर।
सो दृढ़ कर दई हक सूरत, जब आए इमाम आखिर।।४५ ।।

इस संसार में आज दिन तक किसी के संशय मिटे नहीं थे। अब आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी ने आकर सबके दिलों में पारब्रह्म की पहचान कराकर उनके हृदय में पारब्रह्म के स्वरूप की दृढ़ता करा दी।

इमाम नूर है अति बड़ो, पर सो अब कह्यो न जाए।
मेला होसी जब मोमिनों, तब देऊंगी नीके बताए।।४६ ।।

आखिरी इमाम श्री प्राणनाथजी के स्वरूप का तेज अत्यन्त अधिक है जो अभी कहा नहीं जाता। जब मोमिनों का मेला होगा, तब मैं उसको अच्छी तरह से बताऊंगी।

|| प्रकरण || ३२ || चौपाई || ११४५ ||

सनन्ध–कजा की

सुनियो दुनियां आखिरी, भाग बड़े हैं तुम।
जो कबूं कानों न सुनी, सो करो दीदार खसम।।१ ।।

हे आखिरी दुनियां के लोगो! सुनो, तुम्हारे बड़े भाग्य हैं। जिस पारब्रह्म के बारे में कभी तुमने सुना भी नहीं था, उसी अक्षरातीत पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी के, जो सबके खसम (स्वामी) हैं, आकर दर्शन करो।

कई राए राने पातसाह, छत्रपति चक्रवर्त।
ताए हक सुपने नहीं, सो गए लिए गफलत।।२ ।।

कई राजा, राणा, बादशाह, छत्रपति, चक्रवर्ती हो गए, पर उनको सपने में भी पारब्रह्म का पता नहीं चला। इसी संशय के साथ वह चले गए।

कई देव दानव हो गए, कई तीर्थंकर अवतार।
किन सुपने न श्रवनों, सो इत मिल्या नर नार।।३ ।।

कई देवता, दानव, तीर्थंकर, अवतार हुए। उन्होंने सपने में भी पारब्रह्म के विषय में नहीं सुना था। अब इस दुनियां के लोगों को यहां पारब्रह्म साक्षात् मिले हैं।

Nijanand App